ISBN : 978-81-920597-1-6

कृति : शैक्षिक चिन्तन

सम्पादक : प्रो. बी. एल. जैन
प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष-शिक्षा विभाग
जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय),
लाडनूं 341306 (राजस्थान)

सम्पादक मण्डल : डॉ. मनीष भटनागर
डॉ. विष्णु कुमार
डॉ. सरोज राय
डॉ. आभा सिंह
डॉ भावग्राहीप्रधान
डॉ. अमिता जैन
डॉ. गिरिराज भोजक
डॉ गिरधारी लाल शर्मा

संस्करण : मई, 2018 (प्रथम)

मूल्य : 200/-

प्रकाशन : महावीर पथ पब्लिकेशन
(प्राच्यविद्या एवं जैन संस्कृति संरक्षण संस्थान)
लाडनूं-341306 (राजस्थान)
Ph. 7220089301, 7220089302,
www.pvjss.com, email: pvjss108@gmail.com

कम्प्यूटराईज्ड : वैशाली ग्राफिक्स, लाडनूं

मुद्रक : जैन कम्प्यूटर, बापूनगर, जयपुर (राजस्थान)

अध्यापक शिक्षा : पाठ्यचर्या विकास के नूतन आयाम

डॉ. गिरिराज भोजक

शिक्षा राष्ट्र निर्माण की आधारशिला है क्योंकि एक देश की सम्पूर्ण संस्कृति एवं मानवीय संसाधन के सृजनशील आयामों को उचित दिशा में निर्देशन करने का कार्य शिक्षा के द्वारा ही संभव है। शिक्षा के विविध आयाम यथा विद्यालय, अध्यापक, पाठ्यचर्या, मूल्यांकन पद्धति, प्रबंधन एवं शोध आदि का निरन्तर विकास ही सम्पूर्ण मानवीय विकास की पृष्ठभूमि को रेखांकित करता आया है। मानवीय सभ्यता के विकास क्रम में ज्ञान–विज्ञान, कुशलताओं एवं सांस्कृतिक मूल्यों को पीढ़ी दर पीढ़ी संचरण में सदैव एक गुरु या शिक्षक का महत्वपूर्ण तथा अग्रणी स्थान रहा है।

वर्तमान में एक अध्यापक को विभिन्न कुशलताओं, योग्यताओं एवं अध्यापन कलाओं में निष्णांत बनाने एवं प्रशिक्षित करने का मुख्य आयाम है अध्यापक शिक्षा। अध्यापक शिक्षा अथवा शिक्षा की मूलभूत संरचना का मुख्य केन्द्र है पाठ्यचर्या (Curriculum) जिसके माध्यम से इस महनीय कार्य के सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक उद्देश्यों का संतुलित निर्धारण किया जाता है। अध्यापक शिक्षा के विकास क्रम में विभिन्न क्रियाकलापों यथा सूक्ष्मशिक्षण, ब्लॉक टीचिंग, अभिक्रमित अनुदेशन, सामाजिक अनुभव आदि के माध्यम से अनेक नवाचार घटित हुए है। विभिन्न शिक्षा आयोगों, कमेटियों एवं नीति निर्धारकों ने समय–समय पर अध्यापक शिक्षा के विविध आयामों में समय की मांग के अनुरूप नवाचारों को अपनाने पर बल दिया जिनमें N.C.T.E. एवं N.C.E.R.T. तथा U.G.C. द्वारा पाठ्यचर्या सुधार हेतु किये गये प्रयास प्रमुख है। राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् द्वारा प्रदत्त 'Curriculum Frame Work for Quality Teacher Education', 1998 तथा राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् द्वारा प्रदत्त फ्रेमवर्क Teacher Education for Future, 2000 प्रमुख है। वर्तमान में NCF, 2005 एवं N.C.T.E. द्वारा प्रदत्त (NCFTE), 2010 की प्रमुख अनुशंसाओं के परिप्रेक्ष्य में अध्यापक शिक्षा से जुड़ी कुछ महत्वपूर्ण समस्याओं एवं चुनौतियों पर हमें विचार मंथन करने की आवश्यकता है।

अध्यापक शिक्षा पाठ्यचर्या : प्रमुख चुनौतियां एवं समस्याएं

- **वैश्वीकरण एवं तकनीकी प्रशिक्षण** : आधुनिक परिप्रेक्ष्य में वैश्वीकरण

से उभरता आयाम है जिसने हमारे सम्पूर्ण शिक्षा तंत्र को व्यावसायिकरण, निजीकरण एवं उदारीकरण जैसे घटकों द्वारा प्रभावित किया है। यह विचारणीय बिन्दु है कि क्या अध्यापक शिक्षा की सम्पूर्ण पाठ्यचर्या एक अध्यापक की तकनीकी कुशलता यथा कम्प्यूटर, इंटरनेट, टेलीकॉन्फ्रेसिंग आदि के साथ–साथ शिक्षण कौशलों का पूर्ण विकास करने में पूरी तरह सक्षम है?

- **सामाजिक अनुभव एवं समाजोपयोगी कार्य** : अध्यापक एवं समाज के परस्पर अंतर्संबंधों के दृष्टिकोण से विचार करने पर यह तथ्य स्पष्ट होता है कि वर्तमान युवा पीढ़ी जिस प्रकार परिवार, समाज एवं सामाजिक समूहों से दूर केवल 'सोशल नेटवर्किंग' के साथ एक 'आभासी दुनिया' की ओर अग्रसर हो रही है ऐसी परिस्थितियों में अध्यापक शिक्षा की पाठ्यचर्या का महज कुछ प्रतिशत अंश 'सामाजिक सरोकार' तथा 'सामाजिक बुद्धिमत्ता गुणांक' (SQ) पर आधारित है और यदि निर्धारित है भी तो क्रियान्विति की परिस्थितियां चिंता का विषय है।

- **व्यावहारिक बाल एवं किशोर मनोविज्ञान** : विद्यालय एवं महाविद्यालय स्तर पर बढ़ते बाल एवं युवा अपराध चोरी, बलात्कार, अपहरण, डकैती, फिरौती आदि के सम्बन्ध में आज सम्पूर्ण अध्यापक समुदाय एवं शिक्षक प्रशिक्षकों के सामने यह चुनौती का विषय है कि शिक्षक प्रशिक्षण की पाठ्यचर्या का कितना प्रतिशत भाग व्यावहारिक तथा सैद्धान्तिक रूप से अध्यापकों को विद्यार्थियों की समस्याओं के निदान, परामर्श एवं उपचार हेतु तैयार कर पाता है?

- **समस्या प्रधान एवं क्रिया प्रधान कार्यकलाप** : अध्यापक शिक्षा से जुड़े सत्रीय एवं प्रयोगिक कार्य, विद्यालय अनुभव, संस्थागत अवलोकन, शैक्षिक भ्रमण, ऑफ कैम्पस कार्यक्रमों आदि को तुलनात्मक रूप से देखे तो स्थिति स्पष्ट होती है कि इनसे सम्बन्धित उद्देश्य, करणीय कार्य, मूल्यांकन पद्धति तथा व्यावहारिक मानदण्ड कहीं–कहीं या तो स्पष्ट ही नहीं है अथवा इनकी क्रियान्विति व्यावहारिक रूप से बाधित है और मात्र औपचारिकता के रूप में प्रोजेक्ट, प्रयोग, शोधपरक कार्य आदि किये जा रहे है।

- **नवाचारों की न्यूनता एवं पुरातन दर्शन की प्रधानता** : वैश्वीकरण एवं तकनीकी युग की गतिमान एवं परिवर्तनशील स्थिति की तुलना में भारतीय अध्यापक शिक्षा की पाठ्यचर्या में लगभग सभी विषयों में प्राचीन दर्शनों, विधियों, प्रविधियों, प्रतिमानों तथा संरचनात्मक स्तरों का समावेश नवाचारों की तुलना में अधिक है। समीचीन एवं वर्तमान परिवेश पर आधारित पाठ्यवस्तु का अभाव इसे नीरस, बोझिल एवं खानापूर्ति के रूप में प्रस्तुत करता है।